International Journal of Home Science 2019; 5(1): 26-27

International Journal of Home Science

ISSN: 2395-7476
IJHS 2019; 5(1): 26-27
© 2019 IJHS
www.homesciencejournal.com
Received: 07-11-2018
Accepted: 10-12-2018

तब्बसुम खान
शोध छात्रा, राम कृष्ण धर्माथ फाउण्डेशन विश्वविद्यालय, भोपाल, मध्य प्रदेश, भारत

नीलमा कुँवर
पर्वेक्षक, चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

Correspondence
तब्बसुम खान
शोध छात्रा, राम कृष्ण धर्माथ फाउण्डेशन विश्वविद्यालय, भोपाल, मध्य प्रदेश, भारत

उत्तर बाल्यावस्था के बालक एवं बालिकाओं के नैतिक स्तर पर सामाजिक–आर्थिक स्तर का प्रभाव

तब्बसुम खान एवं नीलमा कुँवर

सारांश
उत्तर बाल्यावस्था नैतिक विकास की एक महत्वपूर्ण अवस्था है। जहां बालक एक ओर तो अपनी मूलभूत आवश्कताओं को तीव्रता के अनुसार पूर्ण करना चाहता है, वहीं दूसरी ओर सामाजिक दबाव के कारण उचित व्यवहार द्वारा एक विशेष कार्यशैली विकसित करना चाहता है। उसके परिवेश के व्यक्ति अर्थात् माता–पिता, शिक्षक एवं अड़ोस–पड़ोस सदैव उसे प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से क्या करना चाहिए तथा क्या नहीं करना चाहिए, इस बात के लिए शिक्षित करते रहते हैं। बालक कल के आने वाले भविष्य का नागरिक व प्रणेता होता है। एक समाज का कर्तव्य उसका भविष्य निर्धारित करना, निर्माण करना, उन्हें सही पथ–प्रदर्शन देना, उसका सही तरीके से पालन–पोषण करना, उन्हें अपने कार्यों के प्रति सही दिशा व उचित शिक्षा देना, उसमें आदर्श चारित्रिक एवं नैतिकता का विकास करना है।

कुटशब्दः नैतिक स्तर, उत्तर बाल्यावस्था

प्रस्तावना
आज के युग में नैतिकता का अवमूल्यन सा हो गया है। नैतिकता के महत्व का वर्णन प्राचीन काल से ऋषि मुनि व विद्वान करते आये हैं, नैतिक विकास ही चरित्र और चरित्र व्यक्तित्व को बनाता है। परन्तु आज के औद्योगिकीकरण के युग में आधुनिकता के बहाव में नैतिकता दूर होती जा रही है, यही कारण है कि नई शिक्षा नीति के अंतर्गत मूल्यों, जिनमें नैतिक मूल्य एक है, को अधिक महत्व दिया जा रहा है, विद्यालयों में भी नैतिकता विषय चलाया जा रहा हे। नैतिकता जीवन का नियम है। इसकी के अंतर्गत संस्कार पोषित होते हैं और मानव विकास के प्रत्येक चरण में परिवर्तन, परिवर्तित, परिवर्द्धित व परिमार्जित होते रहते हैं। ये प्रत्येक गुण चरण और गति सोपान में अपरिभाषेय ही बने रहते हैं। जीवन की परिकल्पना और संस्कृति की अवधारणा नैतिक विकास के बिना संभव नहीं है। नैतिक विकास चिंतन शक्ति बनकर अपने व्यवहारिका स्वरूप में, मानव जीवन की भावभूमि में उसकी अस्मिता बन जाते हैं और युग तत्व को अनुप्रणित करते हैं।

अध्ययन के उद्देश्य
1. उत्तर बाल्यावस्था के बालक एवं बालिकाओं के नैतिक स्तर का अध्ययन करना।
2. बालक एवं बालिकाओं के विभिन्न सामाजिक–आर्थिक स्तर का अध्ययन करना।

अध्ययन पद्धति
उत्तर प्रदेश के फैजाबाद (अयोध्या) जिला का चयन किया गया है। इसमें अयोध्या जिले के शासकीय और अशासकीय विद्यालयों का चयन जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी द्वारा की गयी सूची से किया गया है। इसमें कुल 300 बालक–बालिकाओं (150 बालक एवं 150 बालिकायें) का चयन किया गया है इसमें मनोवैज्ञानिक परीक्षण उपकरण Alpana Sengupta and Arun Kumar – Moral Values Scale (MVS) और R.I. Bharadwaj – Socio-economic Status Scale लगाये गये हैं जिसमें सांख्यिकीय उपकरण मध्यमान एवं प्रामाणिक विचलन का इस्तेमाल किया गया है।

परिणाम

सारिणी 1: बालक एवं बालिकाओं के परिवार का स्वरू संख्या=300

परिवार का स्वरूप	बालक		बालिका		योग	
	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत
एकाकी	92	61.34	90	60.0	182	60.7
संयुक्त	58	38.66	60	40.00	118	39.33
योग	150	100.0	150	100.0	300	100.0

बालक के नैतिक विकास पर संयुक्त परिवार का असर कम पड़ता है क्योंकि संयुक्त परिवार में महिलायें बच्चों पर काम की वजह से ज्यादा ध्यान नहीं दे पाती हैं क्योंकि सारा समय परिवार के लोगों की देखरेख में निकल जाता है।

सारिणी 2: बालक एवं बालिकाओं का नैतिक स्तर के आधार पर वर्गीकरण संख्या=300

नैतिक स्तर	बालक		बालिकायें		योग	
	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत
निम्न	9	6.0	4	2.7	13	4.3
मध्यम	41	27.3	16	10.6	57	19.0
उच्च	100	66.7	130	86.7	230	76.7
योग	150	50.0	150	50.0	300	100.0

उच्च नैतिक स्तर के 86.7 प्रतिशत बालिका व 66.7 प्रतिशत बालक हैं। निम्न नैतिक स्तर के बालिका 2.7 एवं बालक 6.0 प्रतिशत हैं बालिकाओं में अपेक्षाकृत उच्च नैतिक स्तर पाया गया है।

तालिका 3: उत्तर बाल्यावस्था के बालक एवं बालिकाओं का सामाजिक–आर्थिक स्तर के मध्य प्रतिशत प्रदर्शन संख्या=300

सामाजिक आर्थिक स्तर	बालक		बालिकायें		योग	
	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत
निम्न	30	20.0	49	32.67	79	52.67
मध्यम	69	46.0	46	30.66	115	76.66
उच्च	51	34.0	55	36.67	106	70.67
योग	150	50.0	150	50.0	300	100.0

उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर 34 प्रतिशत बालक एवं 37.67 प्रतिशत बालिकायें मध्यम आर्थिक स्तर के 46.0 प्रतिशत बालक एवं 30.66 प्रतिशत बालिकायें एवं निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर के 20. 0 प्रतिशत बालक एवं 32.67 प्रतिशत बालिकायें पाई गयीं।

निष्कर्ष

किसी भी बच्चे का सामाजिक–आर्थिक स्तर उसके जन्म से ही निर्धारित हो जाता है जब वह किसी परिवार, जाति में जन्म लेता है और यह स्यतर उसकी पूरी जिंदगी चलता है। इसलिए हर व्यक्ति के जीवन में उसका सामाजिक आर्थिक स्तर एक अलग पहचान रखता है। इसलिए बालक के पूरे जीवन उसका सामाजिक और आर्थिक स्तर अपना प्रभाव डालता रहता है।

सुझाव

1. शिक्षा बालक को सक्षम बनाती है और नैतिक मूल्य उसे पूर्णतया की ओर ले जाते हैं। इसलिए माता–पिता को चाहिए कि वह अपने बच्चों को शिक्षा के अच्छे अवसर दें।
2. सरकार को बच्चों की बी0ए0 तक की पढ़ाई शुल्क मुक्त करनी चाहिए जिससे देश का हर बालक, बालिका, ग्रेजुएट बन सके।

संदर्भ

1. Barathi, Othman. Relationship between family socio-economic and student achievement in moral education among secondary school students. Proceedings of 57th IASTEM International Conference, 2017, 22.
2. Dhull I, Kumar N. Development of moral reasoning in the context of intelligence and socio-economic status following value clarification. Journal of Education and Practice, 2012, 3(13). www.iiste.org.